IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वतंत्रता आन्दोलन मे क्रांतिकारियों का योगदान

विक्रम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर , इतिहास विभाग

श्री सरस्वती संस्कृत कॉलेज खन्ना लुधियाना पंजाब

सार :- जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि क्रांतिकारी, ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति से भरपूर हो , जो अपने प्राणों की चिंता किए बिना , देश के लिए अपना तन, मन और धन न्यौछावर करने के लिए तत्पर हो , जो बिना किसी डर के अपने मार्ग मे आने वाली बाधा को पार करने मे सक्षम हो , जिनकी ताकत और एकजुटता ही उनका हथियार हो , देश और आजादी से बड़कर जिनके लिए और कुछ मायने न रखता हो । ऐसे वीर पुरषो को क्रांतिकारी कहना सही मायने मे बहुत उचित होगा ।

शब्दावली :- देशभक्त , बलिदान ,संघर्ष , राष्ट्रीय एकता , आत्म विश्वास , समाजवाद आदि ।

20 वी सदी कि शुरुवात मे भारत मे क्रांतिकारी आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम के एक क्रांतिकारी पहलू के रूप मे उभरा । भारत मे क्रांतिकारी आंदोलन को दो चरणों मे विभाजित किया जा सकता है । प्रारंभिक क्रांतिकारी आंदोलन : प्रथम विश्व युद्ध से पहले और बाद के क्रांतिकारी आंदोलन । प्रथम विश्व युद्ध के बाद विदेशी ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेकने और स्वशासन स्थापित करने के उद्देश से प्रारम्भिक क्रांतिकारी कार्यकर्ता इटली के एकीकरण और काँग्रेस मे उगरवादियों के उग्र राष्ट्रवाद से प्रेरित थे । उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों मे डर पैदा करने के लिये आरंभ मे बहुत सखत कदम उठाए जिससे कि ब्रिटिश शासन प्रणाली मे हलचल पैदा हो जाये ताकि वो भारतीयों को उनके विशेषधकार प्रदान करने के लिये बाध्य हो जाये ।

20 वी शताब्दी के प्रथम दो दशकों मे क्रांतिकारियों ने रचनात्मक कार्यों के द्वारा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन किया जिसमें लाल लाजपत राय , विपिन चंद्र पाल, बाल गंगाधर तिलक और अरविन्द घोष आदि का नाम आता है । जिन्होंने अपने आंदोलन से ब्रिटिश सरकार कि नीव हिलाने मे बहुत यहां भूमिका निभाई ।

भगत सिंह ,राजगुरु , सुखदेव और चंद्रशेखर आजाद , राम प्रसाद बिशमिल , दुर्गा देवी बटूकेश्वर दत और सचिन सानयाल जिन्होंने जेल मे रहकर अपने पत्रों और लेखों के माध्यम से युवा पीढ़ी को जगाने का काम किया जो कि हिन्दी और गुरुमुखी लिपि मे छपे थे । नीचे दिए गए लेख मे इन क्रांतिकारियों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है

शहीद भगत सिंह : युवा समाजवादी क्रांतिकारी भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को जिला लयालपुर पंजाब मे पिता किशन सिंह और मत विद्यावाती कौर के घर हुआ था जिनको शहीद ऐ आजम भगत सिंह के नाम से भी जाना जाता था । इन्होंने भारत नौजवान सभा की 1924 ई मे स्थापना की थी । भगत सिंह की इंकलाब जिन्दाबाद की गूंज से देश के प्रत्येक नौजवान को आजादी के लिए लड़ने की प्रेरणा मिली । भगत

सिंह ने एक रचना भी लिखी जिसका नाम मै नास्तिक क्यूँ हूँ । भगत सिंह यदपि रक्तपात के पक्षधर नहीं थे परंतु वे वामपंथी विचारधारा को मानते थे तथा कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों से उनका तालुक था । और वे इसी विचारधारा को आगे बढ़ा रहे थे । यदपि वे समाजवाद के पक्के पोषक भी थे । वे लिखते है कि किसानों को विदेशी शासन ही नहीं बल्कि जमीदार और पूँजीपतियों के जुए से भी स्वयं को मुक्त कराना होगा उन्होंने कहा था कि राख का हर कण मेरी गर्मी से गतिमान है । मै एक ऐसा पागल हूँ जो जेल मे भी आजाद है ।

शहीद राजगुरु :-

भारतीय स्वतंत्रता के प्रमुख क्रांतिकारी शिवराम राजगुरु काम जन्म सन 1908 ई मे पुणे जिले के खेड़ा गाँव मे हुआ था । बचपन से ही राजगुरु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । राजगुरु को कशरत व्यायाम करने का बहुत शौक था । और छत्रपति शिवाजी की छापामारी युद्ध शैली के वे बड़े प्रशंसक थे । वाराणसी मे राजगुरु का संपर्क अनेक क्रांतिकारियों से हुआ । वे चंद्रशेखर आजाद से इतने प्रभावित हुये कि उनके संगठन हिंदुस्तान सोशलिश्त रिपब्लिक आर्मी से तत्काल जुड़ गये । 23 मार्च 1931 ई इन्होंने भी हँसते हँसते अपने दोस्तों के साथ फांसी के फंदे को चूम लिया और सदा के लिए अमर हो गये ।

शहीद सुखदेव :

इनका पूरा नाम सुखदेव थापर था । वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे । जिन्होंने लाल लाजपत राय पर लाठीचार्ज तथा उनके कारण हुई उनकी मृत्यु का बदला लिया था । इन्होंने भगत सिंह का मार्गदर्शन किया था । इन्होंने ही लाल लाजपत राय जी से मिलकर चंद्रशेखर आजाद जी को मिलने की इच्छा जाहीर की थी । उन्होंने भगत सिंह और राजगुरु जी के साथ 23 मार्च 1931 ई फांसी पर लटका दिया गया । इनके बलिदान को आज भी सम्पूर्ण भारत मे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है । सुखदेव भगत सिंह की तरह बचपन से ही आजादी का सपना पाले हुये थे । ये दोनों लाहौर नेशनल कॉलेज के छात्र थे । दोनों एक ही वर्ष पंजाब मे पैदा हुये थे और एक ही दिन शहीद हो गये थे ।

- शहीद भगत सिंह अनुसंधान समिति ; 1979 मै नास्तिक क्यूँ हूँ , दिल्ली , मयूर प्रेस
- भल्ला ,प्रवीन ; शहीद ऐ वतन राजगुरु , प्रभात प्रकाशन , 2017

लाहौर षड्यन्त्र व दूसरे मामले मे कई सारे क्रांतिकारियों को लंबी लंबी सजाए हुई । कई क्रान्तिकार्यों ने अपना सारा जीवन काले पानी जैसी जेलों मे बिता दिया । जतिंदसस ने 64 दिन के उपवास के चलते अंत मे भूख से अपनी लड़ाई हार गये और दुखद मृत्यु को प्राप्त हो गए । अंत मे भगत सिंह , राजगुरु और सुखदेव को भी 23 मार्च 1931 ईस्वी को फांसी हो गई । फांसी के तख्ते पर भी ये क्रांतिकारी बस एक ही गीत गया रहे थे ।

दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उलफ़त
मेरी मिट्टी से भी खुशबू ऐ वतन आयेगी ।

शहीद चंद्रशेखर आजाद :- चंद्रशेखर आजाद का जन्म भबरा गाँव , अब चंद्रशेखर आजाद नगर वर्तमान अलीराजपुर जिला मे ब्राह्मण परिवार मे 23 जुलाई 1906 ई को हुआ था । आजाद प्रखर देशभगत थे । लेकिन वे खुद पढ़ने की बजाय दूसरों से सुनने मे ज्यादा अननंदित होते थे । चंद्रशेखर आजाद ने वीरता की नई परिभाषा लिखी । उनके बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारंभ किया गया आंदोलन और तेज हो गया । आजाद की सहादत के 16 बरसों बाद सन 15 अगस्त 1947 ईस्वी को हिंदुस्तान की आजादी का उनका सपना पूरा हुआ किन्तु वे उसे जीते जी देख न सके ।

शहीद सूर्यसेन उर्फ सुरज्या सेन :बंगाल के चटगाँव, चितागोंग अब बांग्लादेश मे स्वाधीनता आंदोलन के अमर नायक बने सूर्यसेन उर्फ सुरज्या सेन का जन्म 22 मार्च 1894 ईस्वी को हुआ था । क्रांतिकारी सूर्य सेन को द हीरो आफ चितागोंग के नाम से भी जाना जाता था । अंग्रेजी हकूमत क्रांतिकारी सूर्य सेन से इतने खौफ खाती थी कि उन्हे बेहोशी की हालत मे फांसी पर चड़ाया गया । फांसी के ऐन वक़्त पहले उनके हाथों के नाखून उखाड़ लिए गये । उनके दांतों को तोड़ दिया गया ताकि अपनी अंतिम सांस तक वे वन्देमातरम के उद्घोष न कर सके । 12 जनवरी 1934 ईस्वी को चटगाँव सेंट्रल जेल मे सूर्य सेन को साथी तारकेश्वर के साथ फांसी की सजा दी गई । उनके बलिदान ने लाखों युवकों को आजादी के लिये लड़ने की प्रेरणा दी ।

क्रांतिकारियों के उद्देश

1 पूर्ण आजादी :- क्रांतिकारियों का एक ही लक्ष्य था जो कि पूर्ण आजादी पाने मे विश्वास रखते थे । वे इस बात पर बाल देते थे कि अंग्रेज तुरंत ही भारत छोड़ दे क्योंकि भारतीय इतने सक्षम है कि वे अपने देश का शासन स्वयं ही चला सकते है ।

2. **ब्रिटिश व्यवस्था मे परिवर्तन :-** क्रांतिकारी भारत की तात्कालिक व्यवस्था मे परिवर्तन चाहते थे । जो सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक था । क्रांतिकारी ऐसी व्यवस्था लाने के पक्ष मे थे जिसमे कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति का शोषण न कर सके और न ही अपने से निर्बल व्यक्ति को किसी प्रकार की हानी पहुंचा सके ।

- चंद्र ,विपिन ; आधुनिक भारत का इतिहास , ऑरियंट ब्लैकसवान प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद तेलंगाना

3. **सम्मानजनक जीवन** : - प्रत्येक भारतीय चाहता था कि उनका जीवन सम्मानजनक हो और उन्हे अपने जीवन की मूलभूत आवस्यकताओं की पूर्ति बिना किसी रोक टोक के मिले । इसके विपरीत अंग्रेजों का व्यवहार भारतीयों के प्रति बहुत ही अपमान जनक था और वे भारतीयों से घृणा करते थे । नतीजतन भारतीयों से अपने हक के लिये अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी ।

4. **लोकतंत्र मे भागीदारी** :- क्रांतिकारी मानते थे लोगों को सरकार कि प्रत्येक गतिविधि मे भाग लेने का अधिकार होना चाहिए । अगर सरकार लोगों के हित मे कार्य न करे तो ऐसी सरकार को जड़ से उखाड़ फेकना चाहिये फिर भले ही वह सरकार स्थानीय हो या ब्रिटिश हो ।

5. **सामाजिक व आर्थिक आसमानताओं का अंत :-** क्रांतिकारी ब्रिटिश हकूमत द्वारा फलाये जा रहे सामाजिक व आर्थिक आसमानताओं का अंत करना चाहते थे । इसके लिये उन्होंने बहुत सख्त कदम भी उठाए जो उस समय के हिसाब से सही भी थे । क्रांतिकारियों के उद्देश पर प्रकाश डालते हुये भगत सिंह ने लिखा था कि क्रांति से हमारा अभिप्राय यह है कि आज कि वस्तु स्थिति और समाज व्यवस्था जो अन्याय पर टिकी हुई है बदला जाये ।

क्रांतिकारियों के सिद्धांत

1. **आत्म विश्वास की भावना :-** सभी क्रांतिकारी आत्म विश्वास की भावना से प्रेरित थे । वे अपने देश को आजाद करने के लिये किसी भी हद तक जाने को तैयार थे । वे अंग्रेजों के अत्याचारों का सामना बड़ी ही निडरता से करते थे ।
2. **सवैधानिक साधनों मे अविश्वास :** क्रांतिकारी सवैधानिक साधनों मे विश्वास नहीं करते थे । वे तत्कालीन शासनव्यवस्था को जल्द से जल्द बदलना चाहते थे । वे नरम दल के तौर तरीकों को अपने के बिल्कुल भी पक्ष मे नहीं थे ।

3. **आत्म बलिदान की भावना :-** क्रांतिकारियों का एक और सिद्धांत था **कि** मारो और फांसी पर झूल जाओ । वे देश के हित के लिये अपने प्राण देना भी जानते थे और प्राण लेना भी जानते थे । वे अंग्रेजों के अत्याचारों से परेशान होकर कहते थे कि प्राण देने से पहले प्राण ले लो ।
4. **जन जागृती की भावना :-** क्रांतिकारियों को यह पूर्ण विश्वास था कि जनता के सहयोग के बिना स्वतंत्रता आंदोलन को सफल नहीं बनाया जा सकता है । वह जनता का सहयोग पाने के लिये पहले उन्मे जागृति लाना चाहते थे । जिससे कि उन्हे देश कि समस्याओं का सही से ज्ञान हो और वो क्रांतिकारियों के साथ मिलकर उनके खिलाफ अंग्रेजों से लड़ने को तैयार हो जाये ।

क्रांतिकारियों के पतन के कारण

क्रांतिकारियों के पास सीमित संसाधन थे । उनके पास धन की कमी थी जिस कारण वे अपनी गतिविधियों को ठीक तरह से अंजाम नहीं दे पाते थे । उनके पास केन्द्रीय सगठन का अभाव था । क्रांतिकारी आंदोलन सिर्फ मध्यम शिक्षित वर्ग तक ही सीमित था । चंद्रशेखर कि मृत्यु के बाद उतर भारत मे क्रांतिकारी आंदोलन लगभग समाप्त हो गया था ।

इसके बावजूद गांधी जी के नेतृत्व मे राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा भी हिंसा का विरोध कर रही थी । विश्वासघाती लोगों द्वारा क्रांतिकारियों की प्रत्येक गतिविधि ब्रिटिश हकूमत तक पहुँचाना । अंत मे मास्टर सूर्य सेन की शहादत के बाद क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व करने वाला कोई भी युवा नेता नहीं रहा । जिस कारण क्रांतिकारी आंदोलन आगे नहीं बड़ पाया ।

निष्कर्ष :- क्रांतिकारियों के जोश , जज्बे और जुनून ने अंग्रेजों की जड़ों को हिला कर रख दिया । उन्होंने अपने बलिदान , त्याग और आत्म समर्पण से करोड़ों लोगों के दिलों मे देशभक्ति की भावना को जागृत किया । भगत सिंह , राजगुरु, सुखदेव और मास्टर सूर्य सेन आदि अन्य क्रांतिकारियों से अपनी जान की परवाह किए बिना जनता को संदेश दिया कि आजादी से बड़कर उनके लिये और कुछ भी नहीं है । क्रांतिकारियों को उस समय की परिस्थितियों के अनुसार जो उचित लगा वो कदम उन्होंने उठाया । अगर उन्हे देश के अन्य बड़े नेताओ का साथ मिल होता तो शायद देश 1947 से पहले ही आजाद हो गया होता ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- सरकार, सुमित : आधुनिक भारत , हिन्दी अनुवाद , सुशीला दोभाल , राज कमल प्रकाशन , नई दिल्ली ,पटना
- चंद्र ,विपिन ; आधुनिक भारत का इतिहास , ऑरियंट ब्लैकसवान प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद तेलंगाना
- शहीद भगत सिंह अनुसंधान समिति ; 1979 मै नास्तिक क्यूँ हूँ , दिल्ली , मयूर प्रेस
- भल्ला ,प्रवीन ; शहीद ऐ वतन राजगुरु , प्रभात प्रकाशन , 2017
- यूनिवर्सिटी आफ कलकत्ता , द कलकत्ता रिव्यू , 1958, पृ 44